ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

Knowledgeable Research
ISSN 2583-6633
Vol.02 No.01 August 2023
http://www.knowledgeableresearch.com/

नासिरा शर्मा कृत 'ठीकरे की मंगनी' व महरूख का फूटना

श्रीमती प्रेमलता मीणा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा. विद्या. दीगोद–सांगोद (कोटा)
डॉ.समय सिंह मीना, सहायक आचार्य, संस्कृत, राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.)
ईमेल – ssmeena80@gmail.com

****

शोध–सार :– हालात की मार से अपने अस्तित्व और स्वतन्त्र पहचान बनाने हेतु संघर्षरत स्त्री **'महरूख'** का जीवन्त चित्रण है– **'ठीकरे की मंगनी'**। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की ख्यातनाम लेखिका 'नासिरा शर्मा' कृत 'ठीकरे की मंगनी' इस उपन्यास में स्त्री विमर्श का एक विश्वसनीय एवं सार्थक रूप मिलता है। महरूख का जीवन उन स्त्रियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी मुक्ति को अकेले में न ढूँढ़कर समाज के उपेक्षित, निम्नवर्गीय, संघर्षरत, शोषित पात्रों की मुक्ति से जोड़कर मुक्ति के प्रश्न को व्यापक बना देती है। महरूख का रफ़त से विवाह के लिए मना कर देना, ठीकरे की मंगनी तोड़ देना, विचारधारा विशेष से प्रेरित कम स्त्रीजनोचित स्वाभाविक स्वाभिमान की अभिलाषा अधिक है। जिस समर्पण, भावुकता और संवेदनशीलता को औरत की कमजोरी मान लिया गया है, उनके प्रदर्शन का महरूख तिरस्कार करती है। वह अपने को लगातार मजबूत बनाती हुई भावी पीढ़ी को संदेश देती है कि स्त्री कभी भी स्वयं को अबला नहीं समझे। वह हालातों के सामने कमजोर नहीं पड़े, बल्कि डटकर उनका सामना करे और अपनी शर्तों पर सम्मानपूर्वक जीवन जीये। इस प्रकार नासिरा शर्मा ने अपने इस पात्र महरूख के माध्यम से स्वयं को नारी–अधिकारों की प्रबल पक्षधर साबित किया है। वे कहती हैं कि औरत सिर्फ पुरुष के लिए नहीं समाज के लिए भी जी सकती है।

संकेताक्षर :– महरूख, पुश्तों, बोलियों–ठोलियों, लिविंग टु–गेदर, ठीकरे की मंगनी, स्त्रीजनोचित, पुश्तैनी।

****

शोध–पत्र :– ''इन्सान दो बार जन्म लेता है, पहली बार माँ की कोख से और दूसरी बार हालात की मार से..... .....प्रत्येक व्यक्ति कुछ सोच कर आगे बढने के लिए किसी एक दिशा की ओर क़दम बढ़ाता है, मगर हवा उसे किसी दूसरी ओर उड़ा ले जाती है। बनना वह कुछ चाहता है और बन कुछ जाता है।''[1]

इसी हालात की मार से **अपने अस्तित्व और स्वतन्त्र पहचान बनाने हेतु संघर्षरत स्त्री 'महरूख' का जीवन्त चित्रण है– 'ठीकरे की मंगनी'। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य की ख्यातनाम लेखिका 'नासिरा शर्मा' कृत 'ठीकरे की मंगनी' इस उपन्यास में स्त्री विमर्श का एक विश्वसनीय एवं सार्थक रूप मिलता है।** 'महरूख' की दास्तान के माध्यम से इस उपन्यास के फलक पर दो खिड़कियाँ खुलती हैं, जिनमें एक गाँव है, वहाँ का स्कूल है, गाँव के असहाय लोग, जिनके छोटे–छोटे दुःखों से भी महरूख विचलित हो उठती है। दूसरी तरफ एक परम्परागत मुस्लिम खानदान है, उसमें रह रहे लोगों के अपने–अपने सरोकार और टकराव हैं। इन दोनों ही परिवेशों से गुजरते हुए महरूख बदहवास दुनिया की सच्चे अर्थों में पड़ताल करती है और चुनती है अपने लिए

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

उस थरथराते सत्य को, जो उसे अकेला तो कर देता है, पर सशक्त ढ़ंग से खड़ा होना सिखा देता है। **आज औरत को जैसा होना चाहिए, उसी की कहानी यह उपन्यास कहता है।[2] लेखिका का यह वाक्य स्त्री को परम्परागत आदर्शवाद की ओर न ले जाकर उसको व्यावहारिक एवं सशक्त बनने को प्रेरित करता है।**

उपन्यास की नायिका 'महरूख' एक समृद्ध एवं भरे–पूरे खानदान में चार पुश्तों के बाद जन्मी पहली लड़की है। इस खानदान में लड़की का जन्म एक महत्त्वपूर्ण घटना थी, इस लड़की को बचाने के लिए जन्म लेते ही एक टोटके की रस्म के तहत गन्दगी से भरे ठीकरे पर चांदी का चमचमाता सिक्का डाल दिया गया। जिसे ददिहाल में नहीं जी पाने वाली लड़की ननिहाल की होकर बच जाये। उसकी खाला 'शाहिदा' द्वारा डाले गये उस सिक्के के साथ ही महरूख की मंगनी उसके पुत्र रफ़त के साथ पक्की कर दी गई। इस प्रकार पैदाईश के तुरन्त बाद ठीकरे की यह रस्म 'ठीकरे की मंगनी' में बदल डाली थी।[3]

इस प्रकार बड़े ही लाड़–प्यार से पली–बड़ी इस महरूख को नये चाँद के निकलते ही सब पुकारने लगते थे। इसी कारण महरूख का नाम भी 'चाँद से चेहरे वाली' छांट कर रखा गया था। हँसते–खेलते बचपन के साथ समय गुजरते ही उसके अलहड़ जीवन पर धीरे–धीरे पारिवारिक बंदिशें लगना शुरू हो गयी। यौवन की दहलीज की ओर कदम बढ़ाने को आतुर महरूख को हाईस्कूल की परीक्षा पास करते ही एक दिन उसकी नानी व पडोसन के आपसी वार्तालाप से अपनी मंगनी के बारे में पता चलता है। यह सब सुनकर ताज्जुब में पड़ी महरूख द्वारा घर लौटकर दादी से किये गये प्रश्न तथा उसका तमतमाया लाल चेहरा साफ–साफ एक युवती के सहज आक्रोश तथा परम्परागत रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह को अभिव्यंजित करता है–

''दद्दा, आपने हमें बताया नहीं ?''.....''यही के.....''हूँ।''[4]

जन्म लेते ही ठीकरे के साथ की गयी यह मंगनी महरूख के जीवन की एक दुःखद घटना बन गई। बिना सोचे–विचारे किया गया यह निर्णय महरूख को स्वीकार नहीं होता लेकिन सबके समझाने पर रफ़त भाई के खुले विचारों तथा उसे दिल्ली में पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के कारण वह स्त्रीजन्य सहजता और कोमलता को धारण करती हुई, मंगनी को स्वीकार लेती है तथा पढ़ने चली जाती है। एक दिन उसे पता चलता है कि प्रगतिवाद और समाजवाद का ढ़िंढोरा पीटने वाले रफ़त भाई अमेरिका जाकर किसी मेम के साथ रह रहे हैं। इस घटना से महरूख को बड़ा आघात लगा जिसके कारण वह अपनी पीएच.डी. की थीसिस का काम अधूरा छोड़कर एक गाँव में अध्यापिका के पद पर नियुक्त हो जाती है और उस गाँव के बच्चों और पिछड़े वर्ग में एक नई चेतना का संचार करती है। उधर रफत भाई अमेरिका से लौटकर उस पर स्वयं व परिवार के माध्यम से दोनों के निकाह के लिए दबाब डालते हैं परन्तु महरूख के लिए अब इस शादी और मंगनी का कोई महत्त्व नहीं रह गया, उसकी जिन्दगी का तो लक्ष्य ही बदल गया। अपनी उम्र के चालीस वर्ष महरूख इस गाँव में बिताती है। सेवानिवृत्त होने के बाद अपने घर आकर स्वयं को बहुत अकेला महसूस करती है। उसकी चाची और माँ के देहान्त के बाद जब पुश्तैनी मकान बिक जाता है तो उसका मन पुनः अपने कार्यक्षेत्र के गाँव में लौटने का हो जाता है। वापस लौटने पर गाँव में उसका गर्म–जोशी से स्वागत होता है जिस पर वह बहुत ही सुकून महसूस करती है। इस प्रकार यह उपन्यास **'महरूख के चरित्र द्वारा स्त्री–विमर्श को प्रस्तुत करता है । साथ ही प्राचीन काल से चली आ रही स्त्री की परम्परागत स्थिति व पुरुष की अधीनता में सुरक्षित रहने की मानसिकता के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करता है।**[5]

एक लड़की होने के नाते अकेले रहकर दूर शहर में पढ़ाई करना कितना नामुमकिन था। जब समृद्ध ज़ैदी परिवार ही संकुचित मानसिकता से ग्रस्त नजर आता है तो फिर आम परिवार की तो बात ही क्या ? यही भाव जाति–बिरादरी के प्रश्नों से चिन्तित महरूख के अब्बू के इन शब्दों में व्यक्त होते हैं–

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

''मैं खानदान वालों से डर रहा हूँ कहीं.....'' कल रफ़त मियां मुझसे भी कह रहे थे कि जिस लड़की के पास तीन फ़र्स्ट क्लास हों, उसे आगे न पढ़ाना बहुत बड़ा जुल्म और भहालत है, दादी जान।..... .....महरूख के पहले हाथ पीले हो जाते, फिर चाहे वह सात समुन्दर पार ही क्यों न चली जाये, मगर..... .. ।[6]

एक औरत ही औरत के दर्द को भली–भाँति समझ सकती है। शिक्षित नारी ही अपनी आने वाली पीढ़ी की सच्ची पथ–प्रदर्शक हो सकती है। महरूख की अम्मी का यह कथन निश्चित ही प्रेरणादायी है–

''मैं तो इतना जानती हूँ कि हम सब अब तक नहीं डरे लोगों की बोलियों–ठोलियों से तो अब क्या खाक डरेंगे ? मैं औरत हूँ , खूब अच्छी तरह से जानती हूँ कि इस नए दौर में औरत के लिए मजबूती क्या होनी चाहिए। जमाने के कहने से क्या हमने लड़कियाँ स्कूल से निकलवा ली थीं ?..... ग़लत तेजी की तरफ़दार तो मैं भी नहीं हूँ , मगर लड़की अपना भला–बुरा समझे यह अक़्ल तो तालीम ही दे सकती है।[7]..... ''वह जमाना कब का लद चुका है, जब औरत नए–नए पकवान बनाकर, ससुराल वालों की खिदमत करके मियां का दिल जीतती थीं, आज तो उसे इन सबके साथ बाहरी दुनियां में भी अपने पैर जमाने हैं। घर–बाहर दोनों जगह अपनी खूबी का सिक्का जमाना होता है, फिर पढ़ी–लिखी लड़कियां किसी पर बोझ बनकर नहीं रहतीं, बल्कि गिरे वक़्त में घर को मर्द की तरह सँभालती भी हैं।''[8]

रफत भाई अपने विचारों से महरूख को प्रभावित करते हैं। उसे रूढ़ियों व परम्पराओं की बेड़ियों में न देखकर एक जिम्मेदार और आत्मविश्वास से परिपूर्ण औरत के रूप में देखना चाहते हैं। रफ़त भाई कहता है–''मैं तुम्हें सिसकती हुई बेकस औरत के रूप में नहीं देखना चाहता हूँ, बल्कि एक मजबूत और तरक्कीयाफ़्ता औरत के रूप में देखना चाहता हूँ।''[9]

इस उपन्यास में महरूख की नानी, माँ, दादी के रूप में स्त्री का परम्परागत रूप दिखाई देता है। वे मानती हैं कि पुरुष के बिना नारी का कोई अस्तित्व नहीं है। नानी कहती है कि ''औरत मर्द से दबकर रहे, इसी में औरत की खुशी है।''[10]

जबकि महरूख की दादी स्त्री–पुरुष के परस्पर पूरक व सहयोगी होने की समर्थक है, जो तुलनात्मक रूप से उदार तथा आधुनिक दृष्टि रखती है–**''दादी की एक ही रट थी मर्द–औरत एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं न कोई छोटा न बड़ा, बराबरी से गाड़ी जिन्दगी की सड़क पर भागती है, वरना तो फिर किसी एक को जिन्दगी भर घसीटना पड़ता है।''**[11]

एम.फिल. की थीसिस लिखने के दौरान सहपाठी रवि के साथ फील्ड वर्क करने, रास्ते में आते–जाते, महरूख किसी शिकारी की तरह चौकन्नी रहती कि कहीं कोई ऐसा शब्द, ऐसा भाव प्रकट नहीं हो जाए, जिससे रूढ़िवादिता की बू आती हो किन्तु एक दिन अपने कमरे पर रवि ने उसके साथ जो बदतमीजी करने की कोशिश की, तो महरूख के अन्दर की संस्कार सम्पन्न एवं आधुनिक बोध से बोझिल वही परम्परागत नारी जाग उठती है। इस घटना से महरूख इतनी आहत होती है कि काफी दिनों तक वह अपने कमरे से बाहर भी नहीं निकलती है। उसे लगता है, **''यह महानगरी है या कोई समन्दर, जहाँ बड़े–बड़े घड़ियाल कभी इच्छाओं के, कभी महत्त्वाकांक्षाओं के, कभी भावनाओं के इन्सानों को निगलने के लिए इधर से उधर मुँह मारते रहते हैं। उनसे बचना एक कशमकश है। कहाँ तक कोई जद्दोजहद करे, यहाँ तो सब हर पल निगलने पर तुले हैं।''**[12]

अपनी विवशता और पुरुष के दोगलेपन पर सोचती हुई महरूख कहती है–''काश, रफ़त भाई उससे अपना रिश्ता न छिपाते तो आज उसे ऐसी शर्मिन्दगी तो न उठानी पड़ती, न दूसरों की नजरें किसी और ढ़ंग से उसकी तरफ उठतीं, मगर उनके चाहने से आज तक कुछ हुआ।''[13]

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

रवि के तंजों और वर्ताव से महरूख के दिलो–दिमाग में एक बात कील की तरह गड़ गई थी कि **''अब उसे अपने को ऊपर से ऐसी ही बनना है, जैसी वह अन्दर से है, जो महरूख तो हो, मगर साथ ही इस माहौल की चुनौतियों का सामना करने के लिए सीना तानकर खड़ी हो सके, आते हुए तीरों को कुन्द कर सके और अपने ढ़ाल जैसे व्यक्तित्व पर कोई निशान तक पड़ने न दे।''**[14]

महरूख स्त्री–पुरुष सम्बन्धों के सन्दर्भ में अपनी दादी के विचारों की समर्थक थी। रफ़त भाई के अमेरिका में जाकर 'वैलरी' नाम की अंग्रेजी मेम के साथ 'लिविंग टु–गेदर' में रहने की खबर से महरूख अन्दर से फूट पड़ती है। जो महरूख अब तक हमेशा अपनी कमनीय चाँदनी से लोगों को लुभाती रही। आज वह चाँद अन्दर ही अन्दर दहक रहा था, शोला बन चुका था। उसके अन्दर का महरूख टूट–टूट कर बिखर जाता है। वह सोचती है ''वह रफत भाई के दिल व दिमाग में कभी नहीं थी। वह तो रिश्ते के नाम पर पोस्टर थी, एक नारी थी, जिसे रफ़त भाई समाज की दीवार पर चिपका कर अपनी पहचान का झण्डा ऊँचा रखना चाहते थे, वरना वह महरूख का हक किसी दूसरी औरत को क्यों दे बैठते ? उसके दिल में बगावत के तूफान उठने लगते हैं। गम के बादल छँट गये थे। अब वहाँ नफरत और हिकारत का आसमान फैला हुआ था जो महरूख को बताता था कि **सबने उसे छला है, कभी प्यार के नाम पर, कभी रिश्तेदारी के नाम पर। महरूख का दिल सख्त पड़ने लगा था। यह सख्ती उसके विखराब को समेटने में मददगार साबित हुई।''**[15]

केवल पूर्ण मनोयोग से अध्यापन मात्र से सरोकार रखने वाली महरूख आज इन्सान के दर्द को समझने वाली इन्सानियत का जीता–जागता स्वरूप बन जाती है। सारे गाँव वाले उसकी परदुःखकातरता व जरूरतमन्द की मदद करने को तत्पर स्वभाव के कारण उसको सर–आँखों पर बिठाये रखते थे। लेकिन उन अनपढ़ किन्तु समझदार लागों के अलावा स्कूल के सह अध्यापक संजय, इशरत व अरोड़ा के दुर्व्यवहार एवं छींटाकशी से गले तक भर उठी महरूख में एक दिन स्वत्व जाग उठता है। वह उनको डाँटते हुए कहती है**–''आज के बाद आप दोनों अपने आपे में रहिएगा और तमीज के साथ मुझसे पेश आइएगा, वरना मुझे कोई सख़्त क़दम उठाना पड़ेगा.....और ख़बरदार जो आगे से आपने मुझसे बेतकल्लुफ़ होने की कोशिश की। शराफ़त की भी एक हद होती है। अब जाइए आप दोनों यहां से !''.....''यह मैं आख़री बार आपको ख़बरदार कर रही हूँ, वरना हेडमास्टर साहब से बात करूंगी और अगर ज़रूरत पड़ी तो आगे भी जाकर आप दोनों की शिकायत करूंगी कि आप अपने साथ काम करने वालों के साथ कैसा सलूक करते हैं। ख़ासकर औरतों के साथ।''**[16]

इसी प्रकार समाज के नाना चेहरे महरूख के सामने घूमने लगते हैं। अब उसे रफ़त भाई द्वारा दिल्ली में पढ़ने का अवसर देने में भी एक पुरुषजन्य अहम् और स्वार्थ महसूस हो रहा था जिससे वह अपने परिचितों व रिश्तदारों के बीच अपने प्रगतिशील होने का लोहा मनवा सके तथा समाज में स्त्री–प्रगति के समर्थक बनने की पहचान बना सके। महरूख अपने हृदय में स्थित आक्रोश को जिन शब्दों में रफ़त भाई के साथ वार्तालाप के दौरान व्यक्त करती है, वे वास्तव में पुरुष द्वारा चिरशोषित और चिरपीड़ित औरत का दर्द है**–''मैंने आपका क्या बिगाड़ा था, जो आपने मेरे मासूम–बेगुनाह जज़्बात को रोंदा, कुचला और मुझे अकेला छोड़ दिया। मैं हालात से लड़ते–लड़ते दम तोड़ गई थी। मुझे मेरी ही नज़रों में ज़लील कर आपने मुझे ख़्वाहिशों के जाल में फंसा कर मेरे अन्दर की महरूख के परख़चे उड़ा दिये थे। मैंने कितना सहा, कितनी टूटी। मेरा सुकून और सब कुछ मुझसे दूर चला गया था। आपकी ख़्वाहिशों के पुल से गुज़रती हुई मैं जिस हाल को पहुंची थी, वहाँ सिर्फ़ दलदल थी. .....सिर्फ़ दलदल! मौत और ज़िन्दगी के बीच में लटकती वह मैं थी।''**[17]

इस प्रकार भारतीय नारी अपने पति की इच्छा की पूर्ति हेतु स्वयं की इच्छाओं को दरकिनार कर पराकाष्ठा तक समर्पण करती है, परन्तु जब पुरुष द्वारा उसकी भावनाओं को आघात पहुँचाया जाता है, उसे अपमानित किया जाता है, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाई जाती है, तो वह विद्रोह कर उठती है। महरूख अपने

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

जन्म के समय की गई मंगनी की खातिर ही रफत भाई की इच्छा के अनुरूप दिल्ली जाकर स्वयं को पूरी तरह बदलने की कोशिश करती है। अपना रहन–सहन, भाषा, विचार सभी दिल्ली महानगर के जीवन के अनुकूल बदलती है। स्वयं को उसके संरक्षण में सुरक्षित महसूस करती है किन्तु जब रफ़त भाई दूसरी स्त्री के प्रति आकर्षित हो उसके स्त्रीत्व को जगाते हैं, ठेस पहुँचाते हैं तो वह गहरी चोट खाकर मंगनी के रिश्ते को हमेशा के लिए भूल अपने जीवन की दिशा ही बदल लेती है। जहाँ उसके जीवन में मंगेतर रफ़त का कोई स्थान, कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता है, वहीं उसका मन अब रफ़त जैसे पुरुष के स्थान पर दीन–दुःखी, गरीब व अभावग्रस्त गाँव के लोगों के दर्द से आहत हो, उनके कष्टों को मिटाने में, उनकी समस्याओं के समाधान में लग जाता है। हालात इस नई महरूख को जन्म देते हैं, जिसका जीवन उसका स्वयं का है, अपने जीवन के सभी निर्णय वह स्वयं करने का अधिकार रखती है। वह स्वयं कहती है–''**मैं जगह, चीज या मकान नहीं थी रफ़त भाई, जो वैसी–की–वैसी ही रहती। मैं इन्सान थी, कमजोरियों का पुतला। मैंने आपको जिस भरोसे से भेजा था, आप भी वैसे कहाँ रह पाये ? कुछ चीज़ें कितनी बेआवाज़ टूटती हैं। मैं बेआवाज़ टूटी थी, किरच–किरच होकर बिखरी थी। बड़ी मुश्किल से अपने को चुना है, समेटा है, जोड़ा है, तब कहीं जीने के काबिल हुई हूँ। मुझसे अब मेरी यह ज़िन्दगी वापस मत छीनिए।**''[18].....**''अब मेरे पास समझ है। मैं अपना बुरा–भला खुद समझ सकती हूँ। ठोस जमीं पर ठोस ज़िन्दगी जीना चाहती हूँ। मेरी ज़िन्दगी पर सिर्फ़ मेरा हक है।**''[19]

एक स्वाभीमानी नारी की भाँति महरूख के दिल में पुरुषों के प्रति नफ़रत नहीं है। वह चाहती है कि पुरुष उसको वही सम्मान और ओहदा प्रदान करे जिसकी वह स्वाभाविक रूप से हकदार है। इसीलिए रफ़त भाई के पूछने पर वह कहती है–**''औरत की ज़िन्दगी के सारे क़रीबी व ज़जबाती रिश्ते मर्द से ही होते हैं। बाप, भाई, शौहर, महबूब, बेटा जैसी अहमियत को नकार कर औरत कहाँ जाएगी।**''[20]

रफ़त भाई जब दुबारा मौका देखकर विवाह का प्रस्ताव रखते हैं तो महरूख साफ–साफ शब्दों में कहती है कि जब आत्मीयता, विश्वास और समर्पण की गर्मी न हो तो ऐसा रिश्ता बेकार है–**''रफत भाई, बिना रूह का जिस्म मुर्दा होता है और बिना एहसास का रिश्ता ठण्डा समझौता। जहाँ सब कुछ होगा, मगर जान नहीं होगी, ज़िन्दगी नहीं होगी। ऐसी मुर्दा के साथ आप भी ज़िन्दगी गुजारना नहीं चाहेंगे और मैं तो .....अपनी मजबूरी का इजहार करते हुए महरूख बोली।**''[21]

सुदीर्घ काल से एक स्त्री पर अधिकार जताने के पुरुष के भाव तथा स्त्री के निरन्तर समर्पण के कारण स्त्री सदैव घुट–घुट कर जीती रही है। पुरुष के सौ अपराध माफ और स्त्री का एक भी नहीं। स्त्री–पुरुष के अधिकारों और स्वातन्त्र्य की विषमता बड़ी बिडम्बनापूर्ण है। महरूख की स्थिति पर दुःखी ताई का यह कथन–**''मर्द सौ गलती करे तो उन्हें माफी, औरत एक करे तो उसके लिए पिस्तौल तैयार है। कभी सुना है कोई मर्द किसी औरत के नाम पर बैठा हो मगर औरत एक मर्द के नाम पर ज़िन्दगी तज देती है।**''[22]

इस प्रकार नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' के माध्यम से हिन्दी साहित्य को महरूख जैसा अद्वितीय एवं मौलिक पात्र दिया है। **महरूख का जीवन उन स्त्रियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी मुक्ति को अकेले में न ढूँढ़कर समाज के उपेक्षित, निम्नवर्गीय, संघर्षरत, शोषित पात्रों की मुक्ति से जोड़कर मुक्ति के प्रश्न को व्यापक बना देती है।**[23] **महरूख का रफ़त से विवाह के लिए मना कर देना, ठीकरे की मंगनी तोड़ देना, विचारधारा विशेष से प्रेरित कम स्त्रीजनोचित स्वाभाविक स्वाभिमान की अभिलाषा अधिक है। जिस समर्पण, भावुकता और संवेदनशीलता को औरत की कमजोरी मान लिया गया है, उनके प्रदर्शन का महरूख तिरस्कार करती है। वह अपने को लगातार मजबूत बनाती हुई भावी पीढ़ी को संदेश देती है कि स्त्री कभी भी स्वयं को अबला नहीं समझे। वह हालातों के सामने कमजोर नहीं पड़े, बल्कि डटकर उनका सामना करे और अपनी शर्तों पर सम्मानपूर्वक जीवन जीये।** इस प्रकार नासिरा शर्मा ने अपने इस पात्र महरूख के माध्यम से स्वयं को

ISSN 2583-6633, Vol.02, No.01, August, 2023
Received Date:15.08.2023
Published Date:31.08.2023

नारी–अधिकारों की प्रबल पक्षधर साबित किया है। वे कहती हैं कि औरत सिर्फ पुरुष के लिए नहीं समाज के लिए भी जी सकती है।

संदर्भ :–

1. नासिरा शर्मा, ठीकरे की मंगनी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 09
2. ठीकरे की मंगनी, पृ. आवरण पृष्ठ
3. ठीकरे की मंगनी, पृ. 17
4. ठीकरे की मंगनी, पृ. 17–18
5. डॉ. मनीषा शर्मा, सामयिक संचेतना और नासिरा शर्मा, वैश्वीकरण, स्त्री–विमर्श, दलित–चेतना, साहित्यागार, जयपुर, पृ. 60
6. ठीकरे की मंगनी, पृ. 23
7. ठीकरे की मंगनी, पृ. 22
8. ठीकरे की मंगनी, पृ. 22
9. ठीकरे की मंगनी, पृ. 31
10. ठीकरे की मंगनी, पृ. 31
11. ठीकरे की मंगनी, पृ. 32
12. ठीकरे की मंगनी, पृ. 48–49
13. ठीकरे की मंगनी, पृ. 49
14. ठीकरे की मंगनी, पृ. 50
15. ठीकरे की मंगनी, पृ. 62
16. ठीकरे की मंगनी, पृ. 99
17. ठीकरे की मंगनी, पृ. 117
18. ठीकरे की मंगनी, पृ. 117
19. ठीकरे की मंगनी, पृ. 117
20. ठीकरे की मंगनी, पृ. 126
21. ठीकरे की मंगनी, पृ. 126
22. ठीकरे की मंगनी, पृ. 135
23. नासिरा शर्मा : एक मूल्यांकन, सं. एम. फिरोज अहमद, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, पृ. 130